पुरा मन्दिर ठोस प्रतीत होते हुए भी गतिशीलता का आभास करता है। 24 चक्र गति का अदभुत प्रभाव डालते है। 7 घोड़े इस सूर्यरथ को खीचने के लिए अपनी चाल की मुद्रा में तराशे गये हैं। सात दिन के प्रतीक यह घोडे छूट गये हैं। यह रथ मन्दिर बनकर तैयार हुआ होगा।

प्रसिद्ध समीक्षक के अनुसार - "The horses of Konark Temple are the most perfect animal statuary in the Whole world" ऐसा लगता है। कि ये शक्तिशाली घोड़े जितना बल लगाकर रथ को खीचते हुए प्रतीत होते हैं। उससे कही अधिक बल लगाने की सामर्थ्य रखते है। किन्तु वे केवल इतना ही बल प्रयोग कर रहे हैं। जितना कि उनके संयुक्त प्रयास से रथ को धीरे-2 चलाने के लिए पर्याप्त है। भार और गति का ऐसा गणितीय सन्तुलन उन शिल्पियो ने किस प्रकार साधा। होगा यह कल्पनीय है। हाथी की प्रतिमा, जो युद्ध के मैदान मे झूलने की मुद्रा मे है। सूंड में सैनिक को दबाए हुए। ये पूर्णाकार. हाथी रौद्र मुद्रा मे आघात करने को आतुर है।

आज यह कल्पना से भी परे है। कि किस प्रकार रेतीली भूमि पर 175 फुट ऊचे मन्दिर के निर्माण के लिए भारी-भारी पत्थर शिलाओ को यहां लाया गया होगा और किस गणितीय यन्त्रो, ज्ञान कौशल से इतनी बडी सरंचना मे उन्हे सन्तुलन करके ऊचाई तक टिकाया होगा है। पत्थरों के बीच मे गारे का प्रयोग नही किया गया है। केवल अपने भार व गुरुत्वाकर्षण से ये शिलाए पूरी ऊचाई तक टिकी है। इन असंख्य दीखने वाली मूर्तियों के विभिन्न रूपो तथा अंग-गये सज्जा रूप दर्शको को बरबस कर देती है। इन मूर्तियो में उपास्यदेव रथ के चक्र घोड़े, चिड़ियां जलचर, नाग नागिन, बिडाल तथा अन्य जीवजन्तु फूलो पौधो, और देव प्रतिमाओ के संग, अलसायी यौवनाए, मृदंग, बांसुरी झांझ, मंजीर वादिकाए तथा प्रेम से बधी मिथुन मुद्राए लावण्यमयी, मांसल नारी के पुष्ट शरीर के साथ मुखमुद्रा की प्रेम मयी अभिव्यक्ति के साथ मूर्तियो को जीवन्ता देती है। खुरदरे पत्थर मे गदी बाहे उठाये नवयौवना, अंगो की लोच, बांकपन, कमनीयता, फूटते यौवन से नारी सौन्दर्य का स्वरूप सहज ही आंख के सामने साकार हो जाता है।

डा० प्रतिभा वशिष्ठ

History of Indian Sculpture - (2002T)
भारतीय मूर्तिकला का इतिहास

लिंगराज मन्दिर – 1060 ई० मे निर्मित यह मन्दिर पूर्वी भारत का सर्वोत्तम तथा विशालतम मन्दिर है। मन्दिर की बाहरी दीवारों पर सूर्य, गणेश, पार्वती, कार्तिकेय, तथा अन्य देव की मूर्तियां बनी है। बीच - बीच मे व्याल एवं मनोहारीणी मुद्रा में सुर सुन्दरियां सुन्दरियां उकेरी गयी है। मन्दिर पर नृत्य करती हुई एवं मिथुन आकृतियां उकेरी गयी है। यहां शिक्षादान विषय का सर्वाधिक अंकन हुआ है। मन्दिर के अनुपातिक सौन्दर्य और उसकी सतहों को सज्जा की रीति व शिल्प की पूर्णता भारतीय मन्दिर स्थापत्य का अनुपम उदाहरण है।

इसके शिल्प सौन्दर्य में उड़ीसा के सज्जा अभिप्राय अनोखे सौन्दर्य शास्त्रीय तत्वों के साथ एक होकर उकेरे गये दिखायी देते है। मन्दिर के चारो ओर काले पत्थर के गणेश, गौरा, और कार्तिकेय की सौन्दर्यमयी प्रतिमाऐ है। ये प्रतिमा बारीकी, लयात्मक और अलंकरण से युक्त है। इस मं० मे तो आठ फीट व्यास के लिंग की प्रतिमा की ऊचाई केवल आठ इंच है।

कोणार्क का सूर्य देवल – कोणार्क जनपद का एक छोटा सा गांव है। जहां भुवनेश्वर या पुरी से सडक मार्ग से जाया जा जा सकता है। बंगाल की बडी का समुद्र तट यहां से तीन किमी० है। यह मन्दिर नरसिंह देव प्रथम 1228-64 के राज्य काल मे निर्मित हुआ था। इसमें गर्भगृह और जगमोहन दोनो का संयोजन इस प्रकार हुआ है कि वे एक रथ जैसे दिखायी देते है। इनका भूविन्यास पंचरथ है। और मन्दिर की उचाई भी पांच भागो में विभक्त है। गर्भगृह का शिखर गिर जाने के कारण उसके स्वरूप का अनुमान लगाना कठिन है। सबसे नीचे एक ऊची कुर्सी है। जिसके नीचले भाग मे चारों ओर हाथियों की पक्ति बनी है।

सूर्य की बारह जोडे चक्र मन्दिर के चबूतरे के दाये बाये की दीवारों पर उत्कीर्ण है। प्रत्येक चक्र मे आठ पहर के प्रतीक आठ अलंकृत अरे है। पाहिये का घेरा अरे, बीच की धुरी और